Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jai college,ara

Notes for B.A part 3 paper 6

Topic :–क्लाईव के प्रशासनिक सुधार (Administrative Reforms of Clive)

क्लाईव ने अपनी दूसरी गवर्नरी के दौरान बंगाल के प्रशासन में कई आवश्यक सुधार, भी किए। ये सुधार सैनिक और असैनिक दोनों ही रूप के थे। इन सुधारों के द्वारा गवर्नर ने कंपनी के कर्मचारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता की भावना को दूर कर प्रशासनिक एवं सैनिक क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया।

शासन संबंधी सुधार:–क्लाईव ने सबसे पहले असैनिक सेवा में व्याप्त भ्रष्टाचार को तरफ ध्यान दिया एवं उसे दूर करने का प्रयास किया। इस संदर्भ में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुधार किए गए-

कर्मचारियों द्वारा उपहार लेने पर प्रतिबंध:– कंपनी के कर्मचारी रिश्वत-उपहार लेने के अभ्यस्त हो चुके थे। अतः, क्लाईव ने उनसे प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करवाए कि वे रिश्वत या उपहार किसी भी रूप में किसी भी व्यक्ति से स्वीकार नहीं करेंगे। इससे रिश्वतखोरी को प्रथा कम हो गई।

कर्मचारियों के निजी व्यापार पर पाबंदी:– क्लाईव के आगमन के समय कंपनी के कर्मचारी कंपनी को प्राप्त व्यापारिक सुविधाओं का दुरुपयोग करते थे। वे बहुधा भारतीयों के हाथ 'दस्तक' बेचकर धन कमाया करते थे। अतः, क्लाईव ने उनके निजी व्यापार पर रोक लगा दी। उनसे प्रतिज्ञापत्र लिखवाए गए, जिसमें उन्होंने निजी व्यापार न करने की शपथ ली।

बेतन में वृद्धि:– क्लाईव इस बात को अच्छी तरह समझता था कि कर्मचारियों के घूस लेने एवं निजी व्यापार करने का एक मुख्य कारण था कि उन्हें कंपनी की तरफ से वेतन के रूप में अपर्याप्त धन मिलता था। इसलिए, क्लाईव ने कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि का प्रस्ताव रखा, परंतु संचालकों ने इसे अस्वीकृत कर दिया। फलतः, कर्मचारियों की आय में बढ़ोतरी के लिए को क्लाईव दूसरा उपाय करना पड़ा।

व्यापार-समिति की स्थापना:– कंपनी के कर्मचारियों के व्यक्तिगत व्यापार पर प्रतिबंध लगने से होनेवाली क्षति को पूरा करने के लिए 10 अगस्त, 1765 को कंपनी के कार्यकर्ताओं की एक व्यापारिक समिति (Society for Trade) गठित की गई। इसे नमक, सुपारी तथा तंबाकू के व्यापार का एकाधिकार दिया गया। इस समिति को होनेवाली आय को लाभांश के रूप में कंपनी के कर्मचारियों को उनके पद के अनुसार (सैनिक एवं असैनिक दोनों प्रकार के कर्मचारी)बाँट देने का प्रावधान किया गया। इस व्यवस्था से सभी आवश्यक वस्तुओं के मूल्य बढ़ गए तथा जनता को अपार कष्ट झेलना पड़ा; हालांकि वेरलेस्ट ने इस

व्यवस्था की प्रशंसा की थी तथा दावा किया कि "एकाधिकार के कायम होने से जनता बहुत सी असुविधाओं से बच गई और नमक का दाम कम हो गया।" वस्तुतः, यह एक 'संगठित लूट' थी, निजी व्यापार का ही संगठित रूप। भाग्यवश कंपनी के संचालकों के विरोध के कारण 1768 ई० में व्यापार-समिति भंग कर दी गई। **कर्मचारियों का स्थानांतरणः–** एक ही स्थान पर बहुत दिनों तक अनेक कर्मचारियों के रहने से विभिन्न निहित स्वार्थ जन्म ले चुके थे। इसके साथ ही बंगाल में रहनेवाले कर्मचारियों को बंगाल में उच्च पद दिए जाते थे। इस अव्यवस्था को दूर करने के उद्देश्य से क्लाईव ने बंगाल के बहुत से कर्मचारियों को मद्रास भेज दिया तथा मद्रास से नए कर्मचारी बुलाकर बंगाल में नियुक्त किए। इससे एक तरफ तो बड़ी संख्या में स्वार्थी कर्मचारियों को बंगाल से हटा दिया गया और दूसरी तरफ कई योग्य कर्मचारी मद्रास से बंगाल चले आए। इससे बंगाल का प्रशासन कुछ सुधर गया। यद्यपि, क्लाईव के इस कार्य का कर्मचारियों ने विरोध किया; परंतु उसने स्थिति पर नियंत्रण पा लिया।

सैनिक सुधार-क्लाईव ने प्रशासनिक सुधारों के अतिरिक्त निम्नलिखित सैनिक सुधार भी किए-

अगरेजी सेना में वृद्धि-बंगाल में राजनीतिक सत्ता की स्थापना के साथ कंपनी के सैनिक कार्य बहुत अधिक बढ़ गए थे। अतः, उसने कंपनी की सेना में वृद्धि करने का निश्चय किया। इस निर्णय के अनुसार एक तरफ तो नवाब की सेना में कमी कर दी गई और दूसरी तरफ कंपनी की सेना में वृद्धि की गई। इससे कंपनी की सैनिक शक्ति और बढ़ गई। यह सेना क्रमशः मुंगेर, पटना और इलाहाबाद में तैनात की गई।दोहरे भत्ते की प्रथा को बंद करना- क्लाईव का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य था सैनिकों को दिए जानेवाले दोहरे भत्ते की प्रथा को बंद कर देना। पहले सैनिकों को युद्धकाल के समय में दोहरा भत्ता दिया जाता था, परंतु बाद में मीरजाफर के समय से शांतिकाल के लिए भी उन्हें भत्ता मिलने लगा। अब यह सैनिकों के वेतन का भाग बन चुका था। इस प्रकार, बंगाल के सैनिकों को मद्रास के सैनिकों से ज्यादा वेतन मिलने लगा था। अतः, कंपनी के संचालकों की आज्ञानुसार बंगाल तथा बिहार की सीमा से बाहर काम करनेवाले सैनिकों को छोड़कर अन्य के दोहरे भत्ते जनवरी, 1766 से बंद कर दिए गए। क्लाईव के इस कार्य का सैनिकों ने तीन विरोध किया। विद्रोह के आसार नजर आने लगे। अनेक अधिकारियों ने त्यागपत्र दे दिए तथा क्लाईव की हत्या की योजना भी बनाई, परंतु क्लाईव इससे विचलित नहीं हुआ। उसने साहसपूर्वक स्थिति का मुकाबला किया। अनेकों के त्यागपत्र स्वीकार कर लिए गए, कुछ को मद्रास तथा स्वदेश वापस भेज दिया गया। बहुतों ने क्षमायाचना भी कर ली। इस तरह, विद्रोह स्वतः समाप्त हो गया।

क्लाईव कोष की स्थापनाः–अवकाश प्राप्त कंपनी के कर्मचारियों के लिए पेंशन की व्यवस्था नहीं थी, अतः उनके आश्रितों, विधवाओं, बच्चों को काफी कष्ट उठाने पड़ते थे। उनके कष्टों को दूर करने एवं उनकी देखभाल के लिए क्लाईव ने अपने नाम से एक फंड की स्थापना की। मीरजाफर ने उसे जो 5 लाख रुपया दिया था उसी से इस फंड की स्थापना की गई । इस कोष से जरूरतमंद कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को आर्थिक सहायता दी जाती थी। इस कार्य से क्लाईव को अपने कर्मचारियों की सहानुभूति प्राप्त हुई।

क्लाईव के प्रशासनिक सुधारों का मूल्यांकन-क्लाईव ने अपने प्रशासनिक कार्यों द्वारा कंपनी को गिरती अवस्था में सुधार लाने का प्रयास किया। उसके कार्यों से कंपनी को आर्थिक लाभ हुए, प्रशासनिक व्यय में

कमी हुई, कर्मचारियों की सुरक्षा की व्यवस्था हुई एवं सैनिक संगठन मजबूत हो गया। उसने रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार को भी कम करने का प्रयास किया, परंतु अपने इस कार्य में वह पूर्णतया सफल नहीं हो सका। रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार का बाजार गर्म ही रहा। यहाँ तक कि जब क्लाईव वापस गया, तो उसपर भी भ्रष्टाचार का आरोप लगा। फिर भी, उसने प्रशंसनीय कार्य किए।